Dr. Kumari Kiran
Department of Home science
AL-Hafeez College Ara.
B.A Part III, XIII Paper (Family Relationship)

What is Social change? Discuss the Place of family in Social Change.

सामाजिक परिवर्तन क्या है? सामाजिक परिवर्तन में परिवार का स्थान या भूमिका का वर्णन

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ पारिवारिक अव्यवस्था है।
इलियट और मेरिल के अनुसार — "सामाजिक परिवर्तन हम किसी भी उन बंधनों की शिथिलता असामंजस्य और पृथक्करण को सम्मिलित करते हैं जो परिवार के सदस्यों को एक दूसरे से बांधे हुए थी।
इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन का अर्थ पति - पत्नी के आपसी संबंधों में तनाव के अतिरिक्त माँ - बाप, बच्चों के संबंध तथा परिवार के अन्य सदस्यों में तनाव, द्वेष उत्पन्न होना भी परिवार तथा समाज के लिए उतना ही घातक होता है।
मार्टिन न्यूमेयर के अनुसार — "पारिवारिक विघटन या सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है, परिवार के सदस्यों में मत और निष्ठा का समाप्त हो जाना अथवा पृथकता में वृद्धि हो जाना है।"
सामाजिक परिवर्तन समाज से संबंधित है। कुछ लोगों ने समाज के ढाँचे में होने वाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहा है तो कुछ ने सामाजिक व्यवहार एवं रीति रिवाज में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा है।

जोन्स ने सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित करते हुए कहा है — "सामाजिक परिवर्तन वह शब्द है, जो पारिवारिक (सामाजिक) क्रियाओं, प्रतिमानों, अंतःक्रियाओं या सामाजिक संगठन के किसी अंग के अन्तर को वर्णित करने के लिए प्रयोग किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है कि किसी वस्तु या स्थिति में अन्तर या रूपान्तर परिवर्तन के कारण होता है। परिवार में लोगों के बीच संबंध टूट जाना, आपसी तनाव होना, परिवार की निकटता भंग हो जाना, पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव हो जाना, स्वयं-कुटुंब में भाग न लेना, विवाह विच्छेद आदि ऐसी स्थिति में जिससे पारिवारिक विघटन तथा सामाजिक परिवर्तन होते हैं।

सामाजिक परिवर्तन चलने वाली एक सार्वभौमिक सामाजिक प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन में परिवार के स्थान के कारणों में कुछ निम्नलिखित हैं।

(1) आर्थिक कारण, औद्योगिक क्रान्ति

(Economic factors, the Industrial revolution)

औद्योगिक क्रान्ति परिवार में परिवर्तन लाने का मुख्य कारण है। पति का कार्य घर के अन्दर नहीं होता है। व्यापारिक उतार-चढ़ाव के कारण से नौकरी से हाथ धोने की सम्भावना बनी रहती है। औद्योगिक विस्तार और उसके फल-स्वरूप भोग की वृद्धि ने ऐसी आराम की वस्तुओं को भी अनावश्यक वस्तुओं का रूप दे दिया है। भौतिक आराम के कारण आज रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठ गया है। परंतु जीवन में स्थिरता की कमी आ गई है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(2) जीवकीय परिवर्तन —
(Biological factors)

प्रत्येक माता-पिता के गुण उनकी संतान में आ जाते हैं। कभी-कभी भिन्नता भी पाई जाती है जिसके परिणाम स्वरूप मानव के प्रत्येक पीढ़ी मानसिक तथा बौद्धिक दृष्टियों में अपनी पहली पीढ़ी से भिन्न होता है। जो समाज में परिवर्तन लाती है।

(3) पारिवारिक जीवन में परिवर्तन —
(Change in family life)

आधुनिक युग में परिवार में परम्परागत परिवर्तन आता जा रहा है। आज पारिवारिक नियंत्रण में कोई नहीं रहना चाहता है। लोगों में बड़ों के प्रति आदर और सम्मान की भावना खत्म हो गई है। जिसके कारण बड़े-बूढ़े सामंजस्य नहीं कर पाते हैं। फलस्वरूप आज की युवा पीढ़ी पुरानी परम्पराओं के साथ परिवार के बुजुर्गों को सहन नहीं कर पाती है। पहले शिक्षा का उत्तरदायित्व परिवार के बाद गुरुकुल रूपी परिवार में था परन्तु आजकल स्कूल और कॉलेज में शिक्षण कार्य हो रहा है बढ़ती आबादी के कारण स्कूल तथा कॉलेजों में छात्र तथा छात्राओं की संख्या में अत्यधिक वृद्धि के फलस्वरूप गुरु शिष्य का संबंध जो आदर पूर्ण था जो आज समाप्त हो गया। आज का प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से जीना चाहता है। इन परिवर्तनों ने परिवार के ढाँचे में पूर्णतः बदल दिया है। प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका पहले से भिन्न हो गई है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(4) संयुक्त परिवार का विघटन —
(Disorganization of Joint Family)

पहले कृषि प्रधान युग था। परिवार के सभी सदस्य एक साथ रह कर खेती-बाड़ी का कार्य करते थे। किसी को दूसरे स्थान पर नहीं जाना पड़ता था, परंतु आज के युग में औद्योगिकरण के कारण यह प्रथा प्रायः नष्ट हो गई है। आज के युवक खेती के अपेक्षा नौकरी को प्रधानता देने लगे हैं और नौकरी के कारण लोग अलग-अलग स्थानों पर बसने लगे हैं। गृह उद्योग भी प्रायः नष्ट हो जाने से बहुत से कुशल कारीगर बेकार होकर नौकरी की खोज में शहरों में बसने लगे। इस कारण परिवार सीमित हो गया है। महिलाओं में शिक्षा को लेकर जागरूकता, उनका घर से बाहर कार्य करना आदि भी परिवर्तन का कारण है।

(5) दहेज-प्रथा के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण —
(Changing attitudes towards Dowry System)

आज के युग में दहेज एक गंभीर समस्या है जिसके कारण समाज में अनेक कुपरिणाम उत्पन्न हो रहे हैं, इसके प्रति नारी अधिक जागृत हो गई है। दहेज के विरोध में आवाज उठाना, अपराधी को सजा दिलवाना, दहेज माँगने वालों से विवाह नहीं करना आदि परिवर्तन आ रहे हैं। सरकारी कानून भी इस कार्य में सहायता प्रदान कर रही है। परन्तु आज भी दहेज प्रथा पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई है।

(6) बाल-विवाह के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन —
(Changes in attitudes towards Child marriages)

आधुनिक युग में माँ-बाप अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के बाद ही शादी के पक्ष में रहते हैं। आज लोगों में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बाल - विवाह संबंधी कुप्रथा नजर आने लगी है - अगर माता-पिता की इच्छा होती भी है तो बच्चे इसका विरोध कर देते हैं। सरकार भी इस ओर ध्यान दे रही है 'शारदा ऐक्ट' 1930 तथा हिन्दू विवाह व तलाक अधिनियम, 1955 में बाल-विवाह का पूर्ण विरोध किया गया।

(7) सामुदायिक जीवन का ह्रास —

(Decline of Community Life) —

भारत की सामाजिक संरचना में पारिवारिक सदस्यों के द्वारा एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ है कि अब निरंतर सामुदायिक भावना का ह्रास होता जा रहा है। जैसे - जैसे उद्योगीकरण व नगरीकरण के द्वारा नगरों का आकार बढ़ रहा है - वैसे वैसे व्यक्ति स्वार्थी तथा अपने में सीमित होता जा रहा है। वैयक्तिक संबंधों में कमी आ रही है। पहले जहाँ परिवार का यदि एक व्यक्ति भी कमाता था तो सब का पालन - पोषण त्याग की भावना से करता था। सामाजिक जीवन में इस परिवर्तन के फलस्वरूप केवल व्यक्ति कमा कर भी एक असहाय व्यक्ति का, जो परिवार का ही सदस्य हो पालन नहीं करना चाहता है।

(8) स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता —

(Economic independence of Women) —

स्त्रियों का ध्यान गृह-कार्यों के अलावा अब बाहरी व्यवसायिक और आर्थिक कार्यों पर भी केन्द्रित हो गया है। स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता ने परिवार की स्थिरता कम कर दी है। पहले जमाने में, अनेक स्त्रियाँ स्नेह के अलावा आर्थिक विचारों को भी दृष्टि में रखकर विवाह करती थीं। आज - कल की स्त्रियाँ विवाह में आर्थिक सहायता की अपेक्षा सहानुभूति और प्रेम को अधिक महत्व देती हैं। वे दुःखी वैवाहिक जीवन को सहन करने के लिए भी अब अपेक्षाकृत कम तैयार होती हैं - क्यों कि अब वे स्वयं समर्थ होती हैं।

स्वयं अपनी स्वाभाविक आवश्यकताएँ पूरा कर सकती है। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में परिवार का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उपर्युक्त बिन्दुओं पर विचार करने से स्पष्ट पता चल रहा है।

Scanned with CamScanner